फणीश्वर नाथ रेणु

फणीश्वर नाथ मंडल 'रेणु' (4 मार्च 1921 - 11 अप्रैल 1977) प्रेमचंद के बाद के युग में आधुनिक हिंदी साहित्य के सबसे सफल और प्रभावशाली लेखकों में से एक थे। वे *मैला आंचल* के लेखक हैं , जिसे प्रेमचंद के *गोदान* के बाद सबसे महत्वपूर्ण हिंदी उपन्यास माना जाता है। [2] फणीश्वर नाथ (मंडल) रेणु का जन्म 4 मार्च 1921 को बिहार के सिमराहा रेलवे स्टेशन के पास एक छोटे से गाँव औराही हिंगना में हुआ था। बिहार का मंडल समुदाय जिससे रेणु ताल्लुक रखते थे, भारत में एक वंचित सामाजिक समूह है। हालाँकि, रेणु के परिवार को ज़मीन, शिक्षा और सामाजिक प्रतिष्ठा का लाभ मिला। रेणु के पिता, शिलानाथ मंडल, भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में सक्रिय थे और एक बेहद प्रबुद्ध व्यक्ति थे, जो आधुनिक विचारों, संस्कृति और कला में गहरी दिलचस्पी रखते थे।

फणीश्वर नाथ रेणु को आंचलिक उपन्यास ('क्षेत्रीय कहानी') की शैली के माध्यम से समकालीन ग्रामीण भारत की आवाज़ को बढ़ावा देने के लिए जाना जाता है , और उन्हें उन अग्रणी हिंदी लेखकों में से एक माना जाता है जिन्होंने क्षेत्रीय आवाज़ों को मुख्यधारा के हिंदी साहित्य में लाया। रेणु बंगाली उपन्यासकार सतीनाथ भादुड़ी के बहुत करीबी सहयोगी थे। उन्होंने बंगाली में *भादुड़ीजी* (श्री भादुड़ी) नाम से एक संस्मरण लिखा ।

उनकी लघु कहानी "मारे गए गुलफाम" को 1966 में बासु भट्टाचार्य (कवि-गीतकार शैलेंद्र द्वारा निर्मित) द्वारा एक फिल्म *तीसरी कसम* (तीसरी कसम) में रूपांतरित किया गया था, जिसके लिए उन्होंने संवाद भी लिखे थे। बाद में उनकी लघु कहानी "पंचलाइट" (पेट्रोमैक्स) को एक टीवी लघु फिल्म में बनाया गया था। 2017 की बॉलीवुड फिल्म *पंचलाइट* भी इसी लघु कहानी पर आधारित है।

जीवनी

फणीश्वर नाथ रेणु का जन्म 4 मार्च 1921 को बिहार के अररिया जिले (तब पूर्णिया जिला) के फारबिसगंज के पास औराही हिंगना गाँव में हुआ था । उनकी शिक्षा भारत और नेपाल में हुई। उनकी प्रारंभिक शिक्षा अररिया और फारबिसगंज में हुई। उन्होंने कोइराला परिवार के साथ रहते हुए नेपाल के विराटनगर के विराटनगर आदर्श विद्यालय से मैट्रिक की पढ़ाई की। 1942 में काशी हिंदू विश्वविद्यालय से आईएएस पास करने के बाद उन्होंने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में भाग लिया । बाद में उन्होंने 1950 में नेपाली क्रांतिकारी आंदोलन में भाग लिया जिसके परिणामस्वरूप नेपाल में लोकतंत्र की स्थापना हुई। उन्होंने हिंदी लेखन में *आंचलिक-कथा की* शुरुआत की । उनके समकालीन कवि सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन अज्ञेय के साथ उनकी बहुत घनिष्ठ मित्रता थी। \ लेखक पर एक जीवनी भी नाम से प्रकाशित हुई है: फणीश्वर नाथ रेणु उनकी नज़र उनका शहर।

लेखन शैली

उनका पहला उपन्यास जिसे उनकी उत्कृष्ट कृति भी माना जाता है, *मैला आंचल* (द सॉइल्ड लिनन, 1954), एक सामाजिक उपन्यास था जिसमें ग्रामीण बिहार और उसके लोगों, खासकर पिछड़े और वंचितों के जीवन को दर्शाया गया था। इसके बाद उन्हें 1970 में भारत के सर्वोच्च नागरिक सम्मानों में से एक, पद्म श्री से सम्मानित किया गया । [1] उन्होंने आंतरिक आपातकाल की घोषणा के विरोध में पद्म श्री लौटा दिया ।

साहित्यिक कृतियाँ

उपन्यास

- *मैला आंचल*
- *परती परिकथा*
- *जुलूस*
- *कृष्य की कहानी*
- *कितने चौराहे*
- *पलटू बाबू रोड*
- *क्या जल प्रलय मुख्य है?*

संस्मरण

- *रिनजल धनजल*
- *वन तुलसी की गंध*
- *नेपाली क्रांति कथा*
- *श्रुत अश्रुत पूर्व*
- *तोतापुर*

कहानी

- *पंचलाइट*

व्यक्तिगत जीवन

उन्होंने तीन बार शादी की, पहली पत्नी रेखा रेणु (अज्ञात व्यक्ति) थीं, दूसरी पद्मा थीं और तीसरी लतिका (मृत्यु 2011)। उनकी तीसरी पत्नी लतिका, जो एक नर्स थीं, से उनकी मुलाकात तब हुई जब वे पटना मेडिकल कॉलेज और अस्पताल में भर्ती थे। उन्होंने 1951 में शादी की। वह *मैला आंचल* , *परती परिकथा* और *मारे गए गुलफाम के पीछे प्रेरणा रही हैं। उनकी बड़ी बेटी कविता रॉय (रेखा रेणु की बेटी) के बारे में बताया गया कि वह बिहार* के कटिहार में खराब हालत में रह रही हैं। पद्मा रेणु के बेटे पद्म पराग रेणु फारबिसगंज से विधायक रहे, जबकि छोटे बेटे दक्षिणेश्वर रेणु ने रेणु समाज सेवा संस्थान नामक एक संगठन चलाया।